E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मोहना के तोमर राजपूत जागीरदारों का ऐतिहासिक उपदेयता

नितेश धनेलिया

विषय : इतिहास

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/07/2025

Paper date Publishing Date

10/07/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.16755012

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

मोहना के तोमर राजपूतों का संबन्ध मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान के राजपूतों से था। समय के अनुसार रिश्ते बदलते रहते हैं और उनमें विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते है। ऐतिहासिक साक्ष्य विभिन्न प्रकार की राजपूतों की वंशावली की जानकारी देते हैं। देववर्मा की मृत्यु संभवतः 1375 ई. में हुई थी। मेजर जनरल कनिंघम ने 1375 ई. से वीरसिंहदेव का ऐसाह की गद्दी पर आसीन होना माना है।

1378 ई. के आस-पास वीरसिंहदेव ने अपनी गतिविधियाँ प्रारम्भ की थी। यद्यपि देववर्मा की जागीर की पुष्टि फिरोज तुगलक ने की थी, तथापि इस प्रदेश के राजपूतों के हृदय में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने की प्रबल कामना कार्य कर रही थी और अवसर भी आ रहा था। फिरोज तुगलक की मृत्यु 20 सितम्बर 1388 ई. को हो गई तथा उसकी मृत्यु के पश्चात् तुगलक साम्राज्य भी डांवाडोल होने लगा। उसके उत्तराधिकारियों में झगड़ा प्रारम्भ हो गया, फिरोज का पौत्र गयासुद्दीन तुगलक गद्दी पर बैठा।

मुख्यबिन्दु : ऐतिहासिक, साक्ष्य, वंशावली, जागीर, साम्राज्य

मोहना के तोमर राजपूत जागीरदारों का ऐतिहासिक उपदेयता

मोहना के तोमर जागीरदारों के सम्बन्ध में विभिन्न इतिहासकारों के अलग- अलग मत है। मुसलमान और राजाओं ने हर जगह दिल्ली के प्रभुत्त अपने को मुक्त कर लिया। अधिकतर मोहना के तोमर जागीरदार तुगलक वंश के नजदीक थे परन्तु 16वीं शताब्दी के अन्त तक तोमरों का विस्तारीकरण होता रहा है। वीरसिंहदेव तोमर, तोमर शासकों के प्रमुख व शक्तिशाली थे। कुछ इतिहासकारो तथा वृंदावनलाल वर्मा बहुत से ऐतिहासिक प्रामाण दिये जिनका सम्बन्ध ग्वालियर के तोमर, नरवर के तोमर एवं मोहना के तोमर जागीरदारों से है।

मध्यकाल में 1526 ई. में भारत में मुगल बादशाह बाबर ने मुगलवंशीय शासन की स्थापना करने में सफलता प्राप्त की थी। बाबर का शासनकाल 1526-1530 ई., हुमायू का 1530-1556 ई., अकबर का 14 फरवरी 1556-1605 ई., जहांगीर का 1605-1627 ई.,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शाहजहां का 1628- 1658 ई., औरंगजेब का 1658-1707 ई. एवं उत्तरकालीन मुगल सम्राटों में औरंगजेब के पुत्र बहादुरशाह प्रथम का 1707-27 फरवरी 1712 ई., जहांदारशाह का 1712-1713 ई., फर्रुखसियर का 1713-1719 §., रफी - उद दरजात ने 28 फरवरी से 4 जून 1719 ई., रफी - उदद्यौला ने 6 जून से 17 सितम्बर 1719 ई. तक, मुहम्मदशाह ने सितम्बर 1719 ई. से अप्रैल 1748 ई. तक अहमदशाह ने 1748-1754 ई., आलमगीर द्वितीय ने 1754- 59 ई. तक शासन किया। शाहआलम द्वितीय 1759-1806 ई. तक नाममात्र का शासक रहा क्योंकि वास्तविक सत्ता ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों में आ गई। 1858 ई. में अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह द्वितीय को रंगून से निर्वासित कर भारत में ब्रिटिश सरकार को वास्तविक शासक घोषित कर दिया गया ।'

तोमर राजपूतों को तंवर नाम से संबोति किया जाता है। तंमर अधिकतर राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हिमाचल एवं जम्मू कश्मीर में तंवर वंश के लोग अलग-अलग भागों में पाये जाते हैं। 736 ई. में दिल्ली राज्य के संस्थापक तंवर राजपूत जिन्होंने 1193 ई. तक दिल्ली राज्य पर अपना आधिपत्य स्थापित रखा था एवं 1394 ई. से 1523 ई. तक ग्वालियर राज्य पर अपना आधिपत्य स्थापित रखने वाले तंवर राजपूतों के वंशज श्यामसिंह तोमर संभवतया 1577 ई. से 1615 ई. (संवत् 1634 से 1672) तक मोहना के जागीरदार रहे थे। श्यामसिंह के उपरांत मोहना के जागीरदार क्रमशः सरदार सिंह 1615-1636 ई. (संवत् 1672 से 1693), गजसिंह 1636-1660 ई. (संवत् 1693 से 1717), पृथ्वीसिंह 1660 से 1696 (संवत् 1717-1753), भौमसिंह 1696- 1749 ई. (संवत् 1753 से 1806), जगमोहन सिंह 1749-1750 ई. (संवत् 1806 से 1807), परीक्षित सिंह 1750 से 1778 ई. (संवत् 1807 से 1835), सीताराम सिंह 1778-1805 ई. (संवत् 1835 से 1862), पृथ्वीपाल 1805-1811 ई. (संवत् 1862 से 1868), वैरीशालसिंह 1811-1869 ई. (संवत् 1868 से 1926), भूपसिंह 1869 - 1902 ई. (संवत् 1926 से 1959), उमराव सिंह 1902-1904 ई. (संवत् 1959 से 1961), एवं सुल्तान सिंह 1904-1925 ई. (संवत् 1961 से 1982) रहे थे।

इधर वीरसिंहदेव वे उसके राजपूत संगठन ने शक्ति सम्पदा का संग्रह प्रारम्भ कर दिया वे स्वतंत्र होने के लिए तत्पर थे । अबूबक्र को हटाकर जब मुहम्मदशाह इटावा आया। वहां उसने वीरसिंह से भेंट कीं । "उस समय सुल्तान को राजपूतों के समर्थन की आवश्यकता थी, इसलिए उसने वीरसिंह को खिल्ल दी और उसकी जागीर में वापस भेज दिया।"

मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की तहसील घाटीगांव में मोहना ग्राम स्थित है। मोहना ग्राम आगरा मुंबई राष्ट्रीय मार्ग 3 पर ग्वालियर से दक्षिण पश्चिम में 57 कि.मी. की दूरी पर है। मोहना में 1577 ई. से 1924 या 25 ई. तक तोमर राजपूत जागीरदारों का प्रभाव स्थापित रहा था। तोमरों की उत्पत्ति सोमवंश (चन्द्रवंश) से मानी जाती है, जो इन्द्रप्रस्थ के पांडवों के वंशज थे । मोहना के तोमर जागीरदारों का मूल निवास स्थल म.प्र. के मुरैना जिले की अंबाह तहसील से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'ऐसा' नामक ग्राम है। ऐसा के तोमर राजपूतों ने सामंत राजा अथवा भूपति या जागीरदार के रूप में चंबल क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित किया था। चंबल क्षेत्र के इन सामंतों का उल्लेख पेहवा के शिलालेख' में प्राप्त होता है। तोमर जागीरदारों की तीन तालुका के अर्न्तगत 52 ग्राम (वावन), 84 ग्राम (चौरासी) एवं 120 ग्राम (वीसा सौ) मानी गई है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

खड्गराय एक श्रेष्ठ वंशावली लेखक थे, उनके विचार श्रेष्ठ थे। खड्गराय की वंशावली ऐतिहासिक दृष्टि से श्रेष्ठ मानी जाती है। 975 ई. के आसपास संभवतः दिल्ली के सम्राट के संकेत पर ही विट्ठलदेव ने अपने इलाके को संगठित किया। विट्ठलदेव ने अपने अधीन 120 ग्राम रखे और 'ऐसा' को अपनी राजधानी बनाया। विट्ठलदेव के पश्चात् रावतों (सामंतों) की इस शाखा की आठ पीढ़ियाँ रही इनकी वंशावली खड्गराय के अनुसार इस प्रकार से है बिट्ठलदेव (2) रूद्र (3) ग्यानचंद्र (4) ध्यानचंद्र (5) लोहंगदेव (6) शक्तिसिंह (7) मणिदेव (8) खाना (9) चन्द्रभानु आदि।

736 ई. में अपना राज्य दिल्ली में स्थापित करने वाले तोमर शासकों में से चाहड़पाल देव तराइन के द्वितीय युद्ध में 1 मार्च 1192 ई. को मारा गया। चाहड़पाल देव का युवराज तेजपाल केवल 15 दिन के लिए दिल्ली पति बना। उसे भी 17 मार्च 1992 ई. में शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के हाथ पराजित होना पड़ा। वह तुर्कों के करद राजा रूप में कुछ समय तक राज्य करता रहा। सन् 1193 ई. में उससे दिल्ली छीन ली गई। उसने पुनः दिल्ली प्राप्त करने का प्रयास किया परन्तु सफल न हो सका और कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसका सिर काटकर दिल्ली में उसके राजप्रसाद पर टंगवा दिया। अब तेजपाल का पुत्र अचलब्रह्म और अजमेर के हरिराज ने दिल्ली प्राप्त करने का प्रयास किया परन्तु सन् 1194 ई. में दोनों पराजित हुए तत्पश्चात् अंचलब्रह्म तोमर रणक्षेत्र में पराजित होकर चंबल क्षेत्र की अपनी प्राचीन राजधानी 'ऐसा' आ गए। अचलब्रह्म के उपरांत वीरशाह, मदनपाल, भूपति, कुवंरसी, घाटमदेव, देवब्रह्म, वीरसिंह देव, 'ऐसा' के जागीरदार रहे। 3 वीरसिंह देव ने 4 जून 1394 ई. में ग्वालियर में तोमर राज्य स्थापित किया था। इस वंश के अंतिम शासक विक्रमादित्य तोमर का शासन संभवतया 1523 ई. तक स्थापित रहा था। विक्रमादित्य को इब्राहीम लोदी ने युद्ध में पराजित किया था। 21 अप्रैल 1526 ई. को विक्रमादित्य पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी की ओर से करद सामंत के रूप में बाबर की सेना के साथ वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ मारा गया। मोहना के तोमर जागीरदारों का शासन करने का तरीका अन्य शासकों से अलग था। तोमर वंश के शासकों की नीतियाँ अन्य शासकों अलग था, वे सभी धर्मो का आदर करते थे। उन्होंने भाण्डेर, करैरा, नरवर, अमोला, पर शासन किया।

ग्वालियर किले को जिब्राल्टर की उपाधि से संबोधित किया गया। यूनेस्को ने ग्वालियर किले को इतिहास की दृष्टि से उसे ऐतिहासिक गढ़ माना है।

ग्वालियर के किले पर 11वीं शताब्दी से आजादी तक बहुत से लोगो ने शासन किया जिसमें तोमर वंश, खिल्जी वंश, मुगल अंग्रेज और मराठा ने शासन किया। ग्वालियर गढ़ पर मुगलों के पूर्व तोमरों का शासन था। तोमरों में राजा मानसिंह अधिक ताकतवर व शक्तिशाली थे परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों में धीरे-धीरे तोमर शासक कमजोर पड़ते गये और उनके स्थान पर सल्तनत एवं मुगलों ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया, जिस कारण से तोमर वंश के शासकों की शक्ति क्षीण हो गई। ग्वालियर गढ़ पर मुगलों का अधिकार स्थापित हो जाने के उपरांत विक्रमादित्य का राजकुमार रामसिंह तोमर मेवाड़ चला गया। रामसिंह तोमर ने 1558 ई. में कुछ सैनिकों के साथ ग्वालियर गढ़ पर आक्रमण कर अपने पूर्वजों के राज्य पर अधिकार करने का प्रयास किया परन्तु "किया खां' मुगल शासन की ओर से तंवर सेना को पराजित कर दिया। मेवाड़ के महाराणा प्रताप सिंह (1572 से 1597 ई.) के शासनकाल में उनका मुगल बादशाह अकबर के साथ 18 जून 1576 ई. को हल्दीघाटी का युद्ध हुआ था। इस युद्ध में रामसिंह तोमर अपने तीनों पुत्र शालिवाहन, भवानी सिंह एवं प्रताप सिंह के साथ वीरगति को प्राप्त हुए। टाड़ के अनुसार साढ़े तीन सौ तंवर वीरों ने संग्राम भूमि में बलिदान दिया था। हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत शालिवाहन

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तोमर के दो राजकुमार श्यामसिंह और मित्रसेन ही जीवित बच सके थे। अकबर की विजय के पश्चात् श्यामसिंह और मित्रसेन मुगलों की सेना में आ गये थे। मुगल दरबार में इन्हें 'ग्वालियर के राजा' कहा जाता था।

1394 ई. के जनवरी या फरवरी माह में बादशाह का फरमान लेकर वीरसिंहदेव अपने दल-बल के साथ ग्वालियर गढ़ पर आए। उस समय ग्वालियर का अमीर (प्रशासक) अहमद बिल शेर खाँ का पुत्र या पौत्र अमीर था । वीरसिंहदेव ने उसे शाही फरमान दिखलाया और ग्वालियर गढ़ सौंपने को कहा । ग्वालियर गढ़ इल्लुतमिश ने 1232 ई. में जीता था। तब से लेकर 1394 ई. तक यह किला दिल्ली के बादशाहों के अधीन रहा। यहाँ पर बड़े-बड़े कैदियों को रखा जाता था। तुर्क सुल्तानों के इतिहास में यह पहली घटना थी जब तुर्कों द्वारा विजित गढ़ राजपूतों को सौंप दिया गया। इस बात पर प्रशासक को विश्वास नहीं हो रहा था, एक और वह सुल्तान के फरमान की अवहेलना भी नहीं कर सकता था, इसलिए टालमटोल करने लगा ।" वीरसिंहदेव ने उसके व्यवहार से कुद्ध होकर दिल्ली जाकर सुल्तान से सैन्य बल की सहायता लेने का निश्चय किया, इस पर उनके मंत्रियों ने उन्हें दिल्ली जाने से रोक दिया और कहा कि दिल्ली जाने से सम्भव है जो कुछ मिला है वह भी वापस न चला जाए।

मुगलों की प्रशासनिक व्यवस्था के संबन्ध में इतिहासकारों के अलग-अलग मत हैं इनमें प्रमुख अबुल फजल है। तोमर राजपूतों के वंश से संबंधित विभिन्न घटनाओं का विवरण जागाजी या पटिया के द्वारा समय-समय पर लिखा जाता रहा है। मोहना के तोमर राजपूत जागीरदारों के वंश लेखक देवीसिंह बड़वाजी (जागाजी या पटिया) पुत्र श्री उमराव सिंह बड़बाजी ग्राम तुंगा जिला- जयपुर, राजस्थान के द्वारा उनके पुरखों की हस्तलिखित वंशावली के आधार पर मोहना के तोमर राजपूतों की वंशावली प्राप्त हुई है। इस वंशावली के अनुसार 'राजा घाटमदेव' ने 'ऐसा' में राज्य किया। उनके वंश में वीसासौ (एक सौ बीस) ग्राम बसे । राजा घाटमदेव के वंश में शामराव हुए जो मोहना की गद्दी पर बैठे। शामराव ऐसा से करियारा, करियारा से मोहना आए और मोहना की जागीरदारी संभाली।

करियारा मोहना से लगभग 15-20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मोहना की जागीरदारी प्राप्त होने से पूर्व शामराव का करियारा में निवास स्थान था। शामराव के पूर्वज घाटमदेव ऐसा के मूल निवासी और जमींदार थे। घाटमदेव के पौत्र वीरसिंह देव ने वि.स. 1439 (1382 ई.) में वीर सिंहावलोक नामक वैद्यक ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ में वीरसिंह देव ने घाटमदेव का नाम कमलसिंह लिखा है । इतिहासकार कनिंघम ने स्थानीय तोमर जागीरदार से एक अन्य वंशावली प्राप्त की थी, जिसमें घाटमदेव का नाम 'कुंवरपाल' अंकित है । गोपाचल आख्यान में घाटमदेव नाम उल्लिखित है। इन्हीं घाटमदेव के वंश में आगे चलकर शामराव हुए। हरिहर निवास द्विवेदी द्वारा किये गये तोमर वंश के गहन शोध अध्ययन के उपरांत ग्वालियर के राजा विक्रमादित्य के पुत्र रामसिंह के ज्येष्ठ पुत्र शालिवाहन के दो पुत्र जो हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत शेष बचे थे, उनका नाम श्यामसिंह और मित्रसेन बताया गया है। रामसिंह तोमर की 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में मृत्यु हो जाने के उपरांत श्यामसिंह और मित्रसेन अकबर (1556-1605 ई.) के राज्यकाल में मुगलों की सेना में भर्ती हो गए थे। और अकबर इनके वीरत्व की सतत् सराहना करता रहता था। यहां इन्हें 'ग्वालियर के राजा' कहा जाता था । '

संदर्भ सूची

1. मोहना के तोमर राजपूत जागीरदारों का इतिहास एपीग्राफी का इंडिका (भाग - 1) पृ. क्र.-242.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. थापर, रोमिला मध्यकालीन भारत, पृ. क्र. - 26
3. खड्गराय कृत गोपाचल आख्यान, पृ. क्र. -84
4. कृष्णन, व. सु. ग्वालियर गजेटियर, पृ. क्र. -33
5. द्विवेदी, हरिहर निवास - दिल्ली के तोमर, पृ.क्र. 256, 257